श्री मुक्तानन्द आश्रम में "M" अक्षर की तस्वीरें

ईशा सरदेसाई द्वारा लिखित

सिद्धयोग पथ पर, मई, अगस्त और अक्टूबर के माह विशेष हैं क्योंकि यह वह समय है जब हम बाबा मुक्तानन्द के सम्मान में महोत्सव मनाते हैं [मई में बाबा जी का जन्मदिवस; अगस्त में बाबा जी की दिव्य दीक्षा; और अक्टूबर में उनकी महासमाधि]।

विशेष रूप से, मई और अक्टूबर के माह "बाबा जी का माह" कहलाने जाने लगे हैं। मैंने "कहलाने जाने लगे हैं," इस अभिप्राय के साथ लिखा है कि यह नाम बिलकुल स्वाभाविक तरीक़े से स्थापित हुआ। १९९० के दशक में एक सत्संग में, श्रीगुरुमाई ने बताया कि कैसे ये माह बाबा जी के अपने हैं—ये 'बाबा जी के माह' हैं। उस भव्य सत्संग में भाग ले रहे सभी लोगों को श्रीगुरुमाई का यह कहना बहुत प्यारा लगा और उन लोगों ने भी मई और अक्टूबर को बाबा जी के माह कहना शुरू कर दिया। और इसी तरह यह नाम प्रचलन में आ गया; यह सिद्धयोग परम्परा का एक भाग बन गया।

और इस बात के समर्थन में, मानो प्रकृति और साथ ही हमारे वातावरण के दैनिक पहलू [उदाहरण के लिए, हमारे निवास तथा कार्यस्थल के आस-पास के दृश्य व ध्वनियाँ] भी अकसर उस समय को दर्शाते हुए और इसमें अपना योगदान देते हुए प्रतीत होते हैं जब बाबा जी के सम्मान में महोत्सव मनाया जाता है। गुरुमाई जी ने बताया है कि किस तरह मई, अगस्त और अक्टूबर के माह में उनका ध्यान बाबा जी के ऐसे संकेतचिह्नों पर जाता है। और, कई सिद्धयोगियों ने भी इन चिह्नों को देखा है : बाबा जी के वस्त्रों के रंग जो पत्तियों में और गगन में उकेरे हुए होते हैं; यहाँ, वहाँ, हर जगह नीलबिन्दु चमक उठता है।

एक चिह्न जिसकी ओर श्रीगुरुमाई ने हमारा ध्यान आकर्षित किया है वह है, अंग्रेजी का अक्षर "M" ["एम", बाबा जी के नाम "मुक्तानन्द" का पहला अक्षर]। बाबा जी अपनी स्वतःस्फूर्तता व सहजता के लिए जाने जाते थे; इसी तरह "M" अक्षर भी हमारे निकट के और हमारे इस व्यापक संसार में भी स्वतःस्फूर्त रूप से व सहजता से प्रकट हो जाएगा। यह हमें बादलों में बनता, पेड़ों की डालियों में आकार लेता या हमारे पैरों के नीचे स्लेटी-भूरे कंकड़-पत्थरों में बना हुआ मिलेगा। झील के किनारे टहलते समय लहरों की सतह पर यह बना हो सकता है या फिर पेड़ की छाल को किसी कीड़े के चबाने से "M" अक्षर बन गया हो सकता है। हमारे चाय के कप में और हमारी कॉफ़ी में दूध डालने पर उस भँवर-से आकार में "M" अक्षर दिख सकता है। या फिर, जब हम अपने काम कर रहे हों तो हो सकता है कि हम इसे और भी अधिक सुनें—जब लोग अपनी समझ, अनिश्चितता, खुशी, सन्तुष्टि व्यक्त कर रहे हों तब वे कहें, "म्म्म् ऽ ऽ ऽ"।

सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर प्रकाशित अनेकानेक सिखावनियों तथा छवियों के समान ही, श्रीगुरुमाई की यह इच्छा है कि सिद्धयोग पथ की वेबसाइट देखने वाले हर व्यक्ति को वह देखने का अवसर मिले जो 'वे' श्री मुक्तानन्द आश्रम में देखती हैं। इसलिए, इस पृष्ठ पर वे तस्वीरें दी गई हैं जिनमें श्री मुक्तानन्द आश्रम की भूमि पर "M" अक्षर प्रकट होता दिखाई दे रहा है। कुछ तस्वीरों में "M" एकदम स्पष्ट दिखाई देगा, जब कि कुछ में आपको उसे देखने के लिए थोड़ी खोज करनी पड़ेगी।

गुरुमाई जी को आशा है कि जब आप इन तस्वीरों को देखें तो, आप चाहे जहाँ भी हों, वहीं आपको भी बाबा जी की उपस्थिति का अनुभव होगा—आप पहचान लेंगे कि बाबा जी आपसे कह रहे हैं, "मैं यहाँ हूँ।"

©२०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।